

सचित्र श्रावक प्रतिक्रमण (नवीन संशोधित व परिवर्धित संस्करण)

आचार्य तुलसी



जैन विश्व भारती प्रकाशन
लाडनूं—३४१३०६ (राज.)

प्रकाशक :

आदर्श साहित्य विभाग

जैन विश्व भारती

पोस्ट : लाडनूं-341306

जिला : नागौर (राज.)

फोन नं. : (01581) 226080, 224671

ई-मेल : books.jvbharati.org

Order/Read Book Online on
<http://books.jvbharati.org>

ISBN No. :

© जैन विश्व भारती, लाडनूं

नवीन संशोधित व परिवर्धित संस्करण : सन् 2020

मूल्य : रुपये मात्र

मुद्रक : पायोराईट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि., उदयपुर

प्रस्तुति

जैन आगमों में एक आगम है 'आवश्यक'। इसका बहु प्रचलित दूसरा नाम है—प्रतिक्रमण। प्रतिक्रमण का अर्थ है—लौटना। इसका कथ्य है असत् से सत् की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर तथा अणु से पूर्ण की ओर गति करना। जैन परम्परा में साधुओं की भांति श्रावकों के लिए भी प्रतिक्रमण की विधि रही है, पर वह सब परंपराओं में एकरूप नहीं है। प्राकृत, गुजराती, राजस्थानी आदि भाषा-भेद के साथ भावना और विधि में भी अन्तर है।

प्रतिक्रमण करने की उपयोगिता स्पष्ट है, फिर भी भाषागत कठिनाई के कारण उसके प्रति नई पीढ़ी का झुकाव कम होता जा रहा है। इस स्थिति का अध्ययन कर हमने मौलिकता को सुरक्षित रखते हुए 'आवश्यक सूत्र' को नया रूप देने का निर्णय लिया है। चतुर्विंशतिस्तव आदि मूल सूत्रों को उसी रूप में रखकर श्रावक—व्रत और अतिचारों को पद्य-बद्ध हिन्दी भाषा में रूपान्तरित कर हमने अपने निर्णय को क्रियान्वित कर दिया। विधि सहित प्रतिक्रमण करने वाले उपासक-उपासिकाएं इस क्रम से लाभान्वित होंगे ही, केवल व्रत-अतिचारों का पारायण करने वाले भी काफी लाभ उठा सकते हैं।

सरल हिन्दी भाषा और सहज लय में आबद्ध होने से इसका

अर्थबोध जितना सुगम है, उतना ही आत्मलीनता में प्रेरक भी है। हिन्दी भाषा में रूपान्तरित व्रत और अतिचारों सहित 'श्रावक प्रतिक्रमण' को अधिक से अधिक श्रावक-श्राविकाएं कण्ठस्थ करें और अपनी आत्म—विशोधि को प्रकृष्ट बनाएं। इससे हमारी सांस्कृतिक परंपरा का संरक्षण और पल्लवन तो होगा ही, इसके साथ बहिर्मुखी वृत्तियों की अन्तर्मुखता और उदात्तीकरण का भी विकास होगा। इसके लिए आवश्यक है कि पाक्षिक, चातुर्मासिक, पर्युषण और संवत्सरी जैसे पर्व-दिवसों पर सामूहिक प्रतिक्रमण हो और हर व्यक्ति इससे लाभ उठाए।

आचार्य तुलसी

पथदर्शन

सचित्र श्रावक प्रतिक्रमण का प्रस्तुत संस्करण संशोधित व परिवर्धित है। नये सिरे से सीखने वाले श्रावक-श्राविकाएं प्रस्तुत संस्करण को काम में लें। जिन्होंने पहले से सीख रखा है उनके लिए इस नये संस्करण की भाषा को सीखना जरूरी नहीं है।

आचार्य महाश्रमण

प्रतिक्रमण संबंधी ध्यातव्य बिन्दु

- दैवसिक, पाक्षिक, चातुर्मासिक, सांवत्सरिक प्रतिक्रमण का कालमान सूर्यास्त से ४८ मिनट तक एवं रात्रिक प्रतिक्रमण का कालमान सूर्योदय से ठीक पूर्ववर्ती ४८ मिनट का समय है। प्रथम आवश्यक से छठे आवश्यक तक का भाग इस समय सीमा में ही पूर्ण करणीय है। चउवीसत्थव पहले तथा नमोत्थुणं एवं पंचपद-वंदना बाद में भी किये जा सकते हैं।
- दैवसिक, रात्रिक, पाक्षिक, चातुर्मासिक, सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में क्रमशः ४,४,१२,२०,४० लोगस्स का ध्यान करणीय है। वह यदि ४८ मिनट के भीतर ही कर लिया जाए तो अति उत्तम होगा। यदि ४८ मिनट में नहीं कर सकें तो पांचवें आवश्यक के कायोत्सर्ग में ४ लोगस्स का ध्यान अवश्य करें। प्रतिक्रमण के पश्चात् अर्थात् परमेष्ठी वंदना के पश्चात् पुनः १२,२०,४० लोगस्स का ध्यान करणीय है।
- प्रतिक्रमण कराने वाले दूसरों को ध्यान कराने के लिए अतिचार अथवा लोगस्स पाठ का उच्चारण कर ध्यान पूरा करा कर स्वयं ध्यान करें। तभी उनका प्रतिक्रमण पूर्णता को प्राप्त होगा।
- प्रस्तुत कृति में **Bold** किया हुआ पाठ ही बोलना है।
- रात्रिक, पाक्षिक, चातुर्मासिक एवं सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में फुटनोट में दिए गए शब्दों का यथास्थान उच्चारण करें।

नमस्कार-सूत्र

णमो अरहंताणं

णमो सिद्धाणं

णमो आयरियाणं

णमो उवज्झायाणं

णमो लोए सव्वसाहूणं ।

एसो पंच णमोक्कारो,

सव्वपावपणासणो ।

मंगलाणं च सव्वेसिं,

पढमं हवइ मंगलं ॥

वंदन-विधि

(चित्र नं. १ की तरह बैठकर व झुककर प्रदक्षिणा देते हुए)

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेमि
वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि
कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि
मत्थएण वंदामि।



चित्र नं. १

वंदना तथा प्रदक्षिणा देने की विधि

(चित्र नं. २ की तरह खड़े होकर)

‘मत्थएण वंदामि’ चउवीसत्थव की आज्ञा ।

ईर्यापथिक सूत्र

इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए विराहणाए गमणागमणे
पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसा-उत्तिंग-पणग-
दगमट्टी-मक्कड़ासंताणासंकमणे जेमे जीवा विराहिया एगिंदिया
बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया अभिहया वत्तिया लेसिया
संघाइया संघट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया, ठाणाओ
ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।



चित्र नं. २

प्रतिक्रमण में खड़े रहने की विधि

कायोत्सर्ग-प्रतिज्ञा

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं
विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि
काउस्सग्गं अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं
जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं
अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं
एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ होज्ज मे काउस्सग्गो
जाव अरहंताणं भगवंताणं नमोक्कारेणं न पारेमि ताव कायं*

* ध्यान प्रारंभ (चित्र नं. ३ की तरह)

ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।



चित्र नं. ३

ध्यान में स्थित रहने की विधि

चतुर्विंशति-स्तव

१. लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ।।

२. उसभमजियं च वंदे, संभवमभिनंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे॥
३. सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि॥
४. कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च॥
वंदामि रिट्टुनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च॥
५. एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीण-जरमरणा।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु॥
६. कित्तिय-वंदिय-मए, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरोग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु॥
७. चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥

नमस्कार-सूत्र

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो
उवज्झायाणं, णमो लोए सब्बसाहूणं।

(ध्यान समाप्त)

चतुर्विंशति-स्तव

१. लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली॥

२. उसभमजियं च वंदे, संभवमभिनंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे॥
३. सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि॥
४. कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च॥
वंदामि रिट्टुनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च॥
५. एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीण-जरमरणा।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु॥
६. कित्तिय-वंदिय-मए, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरोग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु॥
७. चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥

शक्र-स्तुति (चित्र नं. ४, पृ. १३ की तरह बैठकर)

नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं
सहसंबुद्धाणं पुरिसोत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं
पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं
लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं
मग्गदयाणं सरणदयाणं जीवदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं
धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत-
चक्कवट्टीणं दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा अप्पडिहय-
वरणाणदंसणधराणं विअट्टुछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं

तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वण्णूणं
सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाह-
मपुणरावत्तयं सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं
जियभयाणं ।



चित्र नं. ४ शक्र-स्तुति करने की विधि (दायां पैर (Right) जमीन पर
लगा हुआ एवं बायां पैर (Left) जमीन से चार अंगुल ऊपर उठा हुआ ।

हाथ बाएं पैर पर रहेंगे)

प्रतिक्रमण-प्रारंभ

‘मत्थएण वंदामि’ चउवीसत्थव समाप्त, पहले ‘सामायिक’
आवश्यक की आज्ञा ।

(चित्र नं. २, पृ. ९ की तरह खड़े होकर)

प्रतिक्रमण-प्रतिज्ञा

आवस्सई इच्छाकारेण संदिसह भयवं! देवसियं^१ पडिक्कमणं
ठाएमि, देवसिय^२-नाण-दंसण-चरित्ताचरित्त-तव-अइयार-
चिंतवणटुं करेमि काउस्सगं ।

१. दैवसिक प्रतिक्रमण में देवसियं, रात्रिक प्रतिक्रमण में राइयं, पाक्षिक प्रतिक्रमण में देवसियं पक्खियं, चातुर्मासिक प्रतिक्रमण में देवसियं चाउमासियं पक्खियं, सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में देवसियं संवच्छरियं ।
२. देवसिय, राइय, देवसिय पक्खिय, देवसिय चाउमासिय पक्खिय, देवसिय संवच्छरिय ।

नमस्कार-सूत्र

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो
उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।

मंगल-सूत्र

चत्तारि मंगलं — अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं,
केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं ।

चत्तारि लोगुत्तमा — अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलि-पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो ।

चत्तारि सरणं पवज्जामि — अरहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे
सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलि-पण्णत्तं धम्मं सरणं
पवज्जामि ।

सामायिक-प्रतिज्ञा

करेमि भंते! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव नियमं
मुहुत्तं (एगं) पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं — न करेमि, न
कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तस्स भंते! पडिक्कमामि
निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

प्रायश्चित्त-सूत्र

इच्छामि ठाइउं काउस्सग्गं जो मे देवसिओ • अइयारो कओ
काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणज्जो

- देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ,
देवसिओ संवच्छरिओ ।

दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो
 असावगपाउग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं
 गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हं अणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं
 चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडियं
 जं विराहियं जो मे देवसिओ● अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि
 दुक्कडं ।

कायोत्सर्ग-प्रतिज्ञा

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं
 विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं
 अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं
 उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं
 अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं
 एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ होज्ज मे काउस्सग्गो
 जाव अरहंताणं भगवंताणं नमोक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ।*

*ध्यान प्रारम्भ ९९ अतिचारों का (चित्र नं. ३ पृ. १० की तरह)

ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि

-
- देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ,
 देवसिओ संवच्छरिओ ।

ज्ञान के १४ अतिचार

अमल अन्तःकरण से अतिचार की आलोचना।
कर रहा हूँ सरलता से हृदय ग्रन्थि विमोचना।।
सूत्र पढ़ते समय आगे और पीछे कर दिया^१,
अन्य आगम पाठ का उसमें अगर मिश्रण किया^२।
कम अधिक अक्षर कहे^{३,४} पदहीन पाठ पढ़े कहीं^५,
मध्य विराम लिया नहीं^६, अरु घोष भी समुचित नहीं^७।।
योग-विरहित पाठ में संबंध यदि जोड़ा नहीं,
अर्थ समझे बिना ही पद बीच में तोड़ा कहीं^८।
ज्ञान अच्छे ढंग से ना कभी ग्राहक को दिया^९,
संग्रहण संबोध का विपरीत मति से जो किया^{१०}।।

-
१. वाइद्धं—आगम पाठ का विपर्यास।
 २. वच्चाभेलियं—मूलपाठ में अन्य पाठ का मिश्रण करना।
 ३. हीणक्खरं—अक्षरों की न्यूनता करना।
 ४. अच्चक्खरं—अक्षरों का आधिक्य करना।
 ५. पयहीणं—पदों की न्यूनता करना।
 ६. विणयहीणं—विराम रहित पढ़ना।
 ७. घोसहीणं—घोषरहित पढ़ना।
 ८. जोगहीणं—संबंधरहित पढ़ना।
 ९. सुट्टुदिन्न—ज्ञान को विधिवत् न देना।
 १०. दुट्टुपडिच्छियं—ज्ञान को विधिवत् न लेना।

अकाले स्वाध्याय कर की ज्ञान की आशातना^१,
 काल में आलस किया पर हुआ पश्चात्ताप ना^२।
 कर लिया स्वाध्याय कादाचित्क अस्वाध्यायिके,^३
 अरु कभी स्वाध्याय कर पाया नहीं स्वाध्यायिके^४ ॥
 जो मे देवसिओ● अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'

दर्शन के ५ अतिचार

लक्ष्य के प्रति चित्त में सन्देह या भय छा गया^५,
 जो नहीं है लक्ष्य उसके प्रति हृदय ललचा गया^६।
 धर्म-फल की प्राप्ति में मैंने अगर संशय किया^७,
 लक्ष्य-प्रतिगामी प्रशंसा^८ की तथा परिचय किया^९ ॥
 जो मे देवसिओ● अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

-
१. अकाले कओ सज्झाओ—अकाल में स्वाध्याय करना ।
 २. काले न कओ सज्झाओ—उपयुक्त काल में स्वाध्याय न करना ।
 ३. असज्झाइए सज्झाइयं—अस्वाध्यायिक में स्वाध्याय करना ।
 ४. सज्झाइए न सज्झाइयं—स्वाध्यायिक में स्वाध्याय न करना ।
 ५. संका—शंका ।
 ६. कंखा—कांक्षा ।
 ७. वित्तिगिच्छा—विचिकित्सा ।
 ८. परपासंडपसंसा—परपाषंड प्रशंसा ।
 ९. परपासंडसंथवो—परपाषंड संस्तव ।
 - देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ,
 देवसिओ संवच्छरिओ ।

चारित्र के अतिचार

अहिंसा अणुव्रत के ५ अतिचार

क्रोधवश पशु या मनुज को बन्धनों से बांधकर^१,
पीटकर^२ या निष्करुण हो अंग का विच्छेद कर^३।
लादकर अतिभार पशुओं पर स्वयं निर्दय बना^४,
जीविका विच्छिन्न कर^५ यह हृदय पापों से सना ॥
जो मे देवसिओ • अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'

सत्य अणुव्रत के ५ अतिचार

बिना पुष्ट प्रमाण सहसा दोष यों ही मढ़ दिया^६,
रहसि चिन्तन निरत पर आरोप कोई गढ़ दिया^७।
मन्त्रभेद स्वदार^८ का अरु, गलत पथदर्शन किया^९,
लेख झूठा लिख किसी का अहित सम्पादन किया^{१०} ॥
जो मे देवसिओ • अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'

१. बंधे—बंध।
 २. वहे—वध।
 ३. छविच्छेदे—छविच्छेद।
 ४. अतिभारे—अतिभार।
 ५. भत्तपाणवोच्छेदे—भक्तपान-व्यवच्छेद।
 ६. सहसाभक्खाणे—सहसा अभ्याख्यान।
 ७. रहस्सभक्खाणे—रहस्य अभ्याख्यान।
 ८. सदारमंतभेए—स्वदारमंत्रभेद।
 ९. मोसोवएसे—मृषोपदेश।
 १०. कूडलेहकरणे—कूटलेखकरण।
- देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ,
देवसिओ संवच्छरिओ।

अचौर्य अणुव्रत के ५ अतिचार

ली चुराई वस्तु^१ या सहयोग चोरों को दिया^२,
जा विरोधी राज्य में लंघन व्यवस्था का किया^३।
तोल अथवा माप में की हो कमी-बेसी अगर^४,
लोभवश पकड़ी कभी बेमेल मिश्रण की डगर^५ ॥
जो मे देवसिओ • अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'

स्वदारसंतोष अणुव्रत के ५ अतिचार

कुछ समय आश्रित बना आलाप^६ यदि मैंने किया,
बिना पाणिग्रहण ही संलाप कर प्रश्रय दिया^७।
कामक्रीड़ा^८ पर विवाह प्रसंग में सक्रिय रहा^९,
तीव्र भोगासक्ति का यदि स्रोत जीवन में बहा^{१०} ॥
जो मे देवसिओ • अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'

१. तेणाहडे—स्तेन आहत ।
२. तक्करप्पओगे—तस्कर प्रयोग ।
३. विरुद्धरज्जातिककमे—विरुद्धराज्यातिक्रम ।
४. कूडतुलकूडमाणे—कूटतुला-कूटमान ।
५. तप्पडिरूवगववहारे—तत्प्रतिरूपक-व्यवहार ।
६. इत्तरियपरिग्गहियागमणे—इत्वरिक परिगृहीतागमन ।
७. अपरिग्गहियागमणे—अपरिगृहीतागमन ।
८. अणंगकिड्डा—अनंगक्रीडा ।
९. परवीवाहकरणे—परविवाहकरण ।
१०. कामभोगे तिक्वाभिलासे—कामभोग-तीव्राभिलाषा ।
- देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ,
देवसिओ संवच्छरिओ ।

इच्छा परिमाण अणुव्रत के ५ अतिचार
 खेत, घर, सोना, रजत परिमाण का लंघन किया^{१,२},
 और सीमा से अधिक धन-धान्य मैंने रख लिया^३।
 द्विपद—दासी दास पशु-संख्या अगर ऊपर चढ़ी^४,
 कुप्य—शेष अशेष सामग्री सदन की जो बढ़ी^५ ॥
 जो मे देवसिओ • अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'

दिग्व्रत के ५ अतिचार

कर अतिक्रम ऊर्ध्वदिक् परिमाण अगर बढ़ा दिया^६,
 अधो दिक् तिर्यग् दिशा में गमन सीमाधिक किया^{७,८}।
 घटाकर सीमा कहीं परक्षेत्र में अभिवृद्धि की,^९
 विस्मरणवश बढ़ा सीमा निज प्रयोजन सिद्धि की^{१०} ॥
 जो मे देवसिओ • अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'

१. खेत्तवत्थुपमाणातिक्कमे—क्षेत्रवास्तुप्रमाणातिक्रम।
 २. हिरण्णसुवण्णपमाणातिक्कमे—हिरण्य-सुवर्ण-प्रमाणातिक्रम।
 ३. धणधण्णपमाणातिक्कमे—धन-धान्य प्रमाणातिक्रम।
 ४. दुपयचउप्पयपमाणातिक्कमे—द्विपद-चतुष्पद प्रमाणातिक्रम।
 ५. कुवियपमाणातिक्कमे—कुप्यप्रमाणातिक्रम।
 ६. उड्ढदिसिपमाणातिक्कमे—ऊर्ध्वदिक् प्रमाणातिक्रम।
 ७. अहोदिसिपमाणातिक्कमे—अधोदिक् प्रमाणातिक्रम।
 ८. तिरियदिसिपमाणातिक्कमे—तिर्यग्दिक्-प्रमाणातिक्रम।
 ९. खेत्तवुड्ढी—क्षेत्रवृद्धि।
 १०. सति-अंतरद्धा—स्मृति-अन्तर्धान।
- देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ,
 देवसिओ संवच्छरिओ।

उपभोग-परिभोग परिमाण व्रत के २० अतिचार
(भोजन संबंधी ५ अतिचार)

कर सचित्ताहार-वर्जन भूल से भक्षण किया^१,
हरा सूखा फल कभी गुठली सहित मुख में लिया^२।
बिन पके या अधपके धान्यादि खाने में लिए,^{३,४}
फेंकना जिनमें अधिक वे फ्रूट्स खाने में लिए।^५
(कर्मादान (व्यापार) संबंधी १५ अतिचार)

बना अंगारे किया आरंभ तेजस्काय का^६,
काटकर जंगल किया विस्तार निज व्यवसाय का^७।
शकट^८ भाटक^९ स्फोटकर्मक^{१०} और हाथी दांत^{११} का,
लाख^{१२} रस^{१३} विष^{१४} केश^{१५} का वाणिज्य जो बहुभांत का ॥

१. सचित्ताहारे—सचित्त आहार।
२. सचित्तपडिबद्धाहारे—सचित्त प्रतिबद्ध आहार।
३. अप्पउलिओसहिभक्खणया—अपक्व औषधि भक्षणता।
४. दुप्पउलिओसहिभक्खणया—दुष्पक्व औषधि भक्षणता।
५. तुच्छोसहिभक्खणया—तुच्छ औषधि भक्षणता।
६. इगालकम्मे—अंगार कर्म।
७. वणकम्मे—वन कर्म।
८. साडीकम्मे—शकट कर्म।
९. भाडीकम्मे—भाटक कर्म।
१०. फोडीकम्मे—स्फोट कर्म।
११. दंतवाणिज्जे—दंत वाणिज्य।
१२. लक्खवाणिज्जे—लाक्षा वाणिज्य।
१३. रसवाणिज्जे—रस वाणिज्य।
१४. विसवाणिज्जे—विष वाणिज्य।
१५. केसवाणिज्जे—केश वाणिज्य।
- देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ,
देवसिओ संवच्छरिओ।

यंत्र पीलन कर्म^१ निर्लाञ्छनकरण^२ में लिप्तता,
 लगा दावानल वनों में^३ की अगर मैंने खता।
 कभी खेती हेतु सर द्रह आदि का शोषण किया^४,
 जीविका खातिर असंयति जीव का पोषण किया^५ ॥
 जो मे देवसिओ● अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'

अनर्थदंड व्रत के ५ अतिचार

काम उद्दीपक क्रियाएं^६ भांड-चेष्टा हो गई^७,
 चेतना सुविवेक की यदि मुखरता में खो गई^८।
 अस्त्र-शस्त्रों का किया संयोग निर्हेतुक कभी^९,
 हुआ उप-परिभोग का अतिरेक^{१०} ये दुष्कृत सभी ॥

जो मे देवसिओ● अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'।

-
१. जंतपीलनकम्मे—यंत्रपीडन कर्म।
 २. निल्लंछणकम्मे—निर्लाञ्छन कर्म।
 ३. दवग्गिदावणया—दवाग्नि दापनता।
 ४. सरदहतलागपरिसोसणया—सर-द्रह-तडाग-परिशोषण।
 ५. असतीजणपोसणया—असतीजन पोषण।
 ६. कंदप्पे—कन्दर्प।
 ७. कुक्कुइए—कौत्कुच्य।
 ८. मोहरिए—मौखरिक।
 ९. संजुत्ताहिकरणे—संयुक्त-अधिकरण।
 १०. उवभोगपरिभोगातिरित्ते—उपभोग परिभोगातिरिक्त।
 - देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ,
 देवसिओ संवच्छरिओ।

सामायिक व्रत के ५ अतिचार

साम्य के अभ्यास में मन-मलिनता यदि आ गई,^१
वचन काया पर कलुषता की घटा जो छा गई^{२,३}।
किया जो संकल्प उसका विस्मरण यदि हो गया।^४
काल सीमा आकलन में चित्त स्थिरता खो गया^५ ॥
जो मे देवसिओ • अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'

देशावकाशिक व्रत के ५ अतिचार

दूर से चीजें मंगाई क्षेत्र सीमा लांघकर^६,
तथा भेजी अनुचरों के साथ सीमा पारकर^७।
शब्द से संकेत कर या रूप दिखलाकर कभी^{८,९},
काम करवाया किसी से फेंक तृण कंकर कभी^{१०} ॥
जो मे देवसिओ • अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'

१. मणदुप्पणिहाणे—मनोदुष्प्रणिधान।
२. वइदुप्पणिहाणे—वाक्-दुष्प्रणिधान।
३. काय-दुप्पणिहाणे—काय-दुष्प्रणिधान।
४. सामाइयस्स सतिअकरणया—सामायिक की स्मृति न रखना।
५. सामाइयस्स अणवट्टियस्स करणया—सामायिक को अनवस्थित रूप में करना।
६. आणवण्णओगे—आनयन प्रयोग।
७. पेस (सा ?) णवण्णओगे—प्रेष्य प्रयोग।
८. सद्धानुवाए—शब्दानुपात।
९. रूवाणुवाए—रूपानुपात।
१०. बहियापोग्गलपक्खेवे—बहिःपुद्गल प्रक्षेप।
- देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

पौषधोपवास व्रत के ५ अतिचार

अगर शय्या और संस्तारक न प्रतिलेखित किए, गलत विधि प्रतिलेखना कर काम में उनको लिए।^१ बिन प्रमार्जन अगर उनका कर लिया उपयोग जो, तथा करके दुष्प्रमार्जन किया सहज प्रयोग जो।^२ प्रस्रवण उच्चार भूमि की न की प्रतिलेखना, की अगर उसमें रही हो सजगता की रेख ना।^३ बिना पूंजी अविधि से पूंजी अगर भूमी रही,^४ पूर्ण पौषध की अगर अनुपालना न हुई सही।^५ जो मे देवसिओ● अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'

१. अप्पडिलेहिय-दुप्पडिलेहिय-सिज्जासंथारे—अप्रतिलेखित-दुष्प्रतिलेखित शय्या-संस्तारक।
२. अप्पमज्जिय-दुप्पमज्जिय-सिज्जासंथारे—अप्रमार्जित-दुष्प्रमार्जित शय्या-संस्तारक।
३. अप्पडिलेहिय-दुप्पडिलेहिय-उच्चारपासवणभूमी—अप्रतिलेखित-दुष्प्रतिलेखित उच्चारप्रस्रवण भूमी।
४. अप्पमज्जिय-दुप्पमज्जिय-उच्चारपासवणभूमी—अप्रमार्जित-दुष्प्रमार्जित उच्चार-प्रस्रवण भूमी।
५. पोसहोववासस्स सम्मं अणणुपालणया—पौषधोपवास का सम्यक् अननुपालन।
- देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

यथासंविभाग व्रत के ५ अतिचार

देय वस्तु सचित्त ऊपर रखी^१ या उससे ढकी,^२
कर अतिक्रम काल का की प्रार्थना आहार की^३।
वस्तु अपनी किन्तु पर की बताकर यदि छल किया^४
दान शोभा ख्याति मत्सर भाव से मुनि को दिया^५ ॥
जो मे देवसिओ • अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'

संलेखना के ५ अतिचार

ऐहलौकिक वस्तु में यदि आन्तरिक प्रियता रही,^६
पारलौकिक वस्तु में अनुरक्ति की धारा बही^७।
अगर जीवन मरण की आसक्ति में मन खो गया,^{८,९}
कामभोगों के लिए चैतन्य मेरा सो गया ॥^{१०}
जो मे देवसिओ • अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'

-
१. सचित्तनिक्खेवणया—सचित्त निक्षेपणता ।
 २. सचित्तपिहणया—सचित्त पिधानता ।
 ३. कालातिक्कमे—कालातिक्रम ।
 ४. परववदेसे—परव्यपदेश ।
 ५. मच्छरियया—मात्सर्य ।
 ६. इहलोगासंसप्पओगे—इहलोकाशंसाप्रयोग ।
 ७. परलोगासंसप्पओगे—परलोकाशंसाप्रयोग ।
 ८. जीवियासंसप्पओगे—जीविताशंसाप्रयोग ।
 ९. मरणासंसप्पओगे—मरणाशंसाप्रयोग ।
 १०. कामभोगासंसप्पओगे—कामभोगाशंसाप्रयोग ।
- देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ ।

अणुव्रत गुण और शिक्षाव्रत यही जीवन-निधि,
सतत संयम-साधना से पूर्ण हो श्रावक-विधि।
साधना में अति-व्यतिक्रम अति-अनाचरणं कृतं,
विफल हों सब पाप स्वीकृत करुं मिथ्या दुष्कृतं॥
जो मे देवसिओ● अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'

अठारह पाप

१. प्राणातिपात २. मृषावाद ३. अदत्तादान ४. मैथुन
५. परिग्रह ६. क्रोध ७. मान ८. माया ९. लोभ १०. राग ११. द्वेष
१२. कलह १३. अभ्याख्यान^१ १४. पैशुन्य^२ १५. परपरिवाद
१६. अरति रति^३ १७. मायामृषा १८. मिथ्यादर्शनशल्य।

इन अठारह पापस्थानों का आचरण किया हो तो जो मे
देवसिओ● अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

प्रायश्चित-सूत्र

इच्छामि आलोइउं जो मे देवसिओ● अइयारो कओ काइओ
वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो
दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो
असावगपाउग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं
गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हं अणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं

● देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ,
देवसिओ संवच्छरिओ।

१. झूठा आरोप लगाना।

२. चुगली।

३. संयम से अप्रेम, असंयम से प्रेम।

चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडियं
जं विराहियं जो मे देवसिओ● अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि
दुक्कडं ।

नमस्कार-सूत्र

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो
उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।

(ध्यान समाप्त)

‘मत्थएण वंदामि’ पहला आवश्यक समाप्त, दूसरे ‘चतुर्विंशति-
स्तव’ आवश्यक की आज्ञा ।

चतुर्विंशति-स्तव

१. लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥
२. उसभमजियं च वंदे, संभवमभिनंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥
३. सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥
४. कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥
५. एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीण-जरमरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥

-
- देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ,
देवसिओ संवच्छरिओ ।

६. कित्तिय-वंदिय-माए, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरोग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु।।
७. चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।
- ‘मत्थएण वंदामि’ दूसरा आवश्यक समाप्त, तीसरे ‘वंदना’
आवश्यक की आज्ञा

वंदना सूत्र

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहियाए*।
अणुजाणह मे मिउग्गहं*। निसीहिं अहोकायं कायसंफासं।
खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो
वइक्कंतो?²* जत्ता भे?³* जवणिज्जं च भे?⁴* खामेमि
खमासमणो! देवसियं वइक्कमं³* आवस्सियाए⁵ पडिक्कमामि
खमासमणाणं देवसियाए आसायणाए⁶ तित्तीसन्नयराए, जं किंचि

*चिह्नांकित स्थानों पर खड़े होने पर चित्र नं. ५ (पृ. ३०) की तरह और बैठने पर
चित्र नं. ६ (पृ. ३०) की तरह वंदना करें।

१. चित्र नं. ६ (पृ. ३०) की तरह बैठकर।
२. दिवसो वइक्कंतो, राई वइक्कंता, दिवसो पक्खो वइक्कंतो, दिवसो चाउमासो पक्खो वइक्कंतो, दिवसो संवच्छरो वइक्कंतो।
३. देवसियं वइक्कमं, राइयं वइक्कमं, देवसियं पक्खियं वइक्कमं, देवसियं चाउमासियं पक्खियं वइक्कमं, देवसियं संवच्छरियं वइक्कमं।
४. चित्र नं. ५ (पृ. ३०) की तरह खड़े रहकर। नोट : दूसरे वंदना सूत्र में यहां खड़ा नहीं होना।
५. देवसियाए आसायणाए, राइयाए आसायणाए, देवसियाए पक्खियाए आसायणाए, देवसियाए चाउमासियाए पक्खियाए आसायणाए, देवसियाए संवच्छरियाए आसायणाए।

मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए
 मायाए लोभाए सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए
 सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे देवसिओ^१ अइयारो कओ
 तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं
 वोसिरामि ।

वंदना सूत्र

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहियाए * ।
 अणुजाणह मे मिउग्गहं * । निसीहि^२ अहोकायं कायसंफासं ।
 खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो
 वइक्कंतो^३ ? * जत्ता भे ? * जवणिज्जं च भे ? * खामेमि
 खमासमणो! देवसियं वइक्कमं^४ * आवस्सियाए पडिक्कमामि
खमासमणाणं देवसियाए आसायणाए^५ तित्तीसन्नयराए, जं किंचि

१. देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ,
 देवसिओ संवच्छरिओ ।

*चिह्नांकित स्थानों पर खड़े होने पर चित्र नं. ५ (पृ. ३०) की तरह और बैठने पर
 चित्र नं. ६ (पृ. ३०) की तरह वंदना करें ।

२. चित्र नं. ६ (पृ. ३०) की तरह बैठकर ।

३. दिवसो वइक्कंतो, राई वइक्कंता, दिवसो पक्खो वइक्कंतो, दिवसो चाउमासो
 पक्खो वइक्कंतो, दिवसो संवच्छरो वइक्कंतो ।

४. देवसियं वइक्कमं, राइयं वइक्कमं, देवसियं पक्खियं वइक्कमं, देवसियं
 चाउमासियं पक्खियं वइक्कमं, देवसियं संवच्छरियं वइक्कमं ।

५. देवसियाए आसायणाए, राइयाए आसायणाए, देवसियाए पक्खियाए आसायणाए,
 देवसियाए चाउमासियाए पक्खियाए आसायणाए, देवसियाए संवच्छरियाए
 आसायणाए ।

मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए
 मायाए लोभाए सब्बकालियाए सब्बमिच्छोवयाराए
 सब्बधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे देवसिओ^१ अइयारो कओ
 तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं
 वोसिरामि।



चित्र नं. ५



चित्र नं. ६

वंदना आवश्यक में खड़े रहकर व बैठकर वंदना करने की विधि

‘मत्थएण वंदामि’ तीसरा आवश्यक समाप्त, चौथे

‘प्रतिक्रमण’ आवश्यक की आज्ञा

आलोचना सूत्र (चित्र नं. ७ की तरह बैठकर)

तस्स सब्बस्स देवसियस्स^२ अइयारस्स दुच्चितिय-दुब्भासिय-

१. देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ,
 देवसिओ संवच्छरिओ।
२. देवसियस्स, राइयस्स, देवसियस्स पक्खियस्स, देवसियस्स चाउमासियस्स
 पक्खियस्स, देवसियस्स संवच्छरियस्स।

दुच्चिद्वियस्स आलयंतो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं
वोसिरामि ।



चित्र नं. ७

प्रतिक्रमण आवश्यक में बैठने की विधि

प्रायश्चित्त-सूत्र

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ● अइयारो कओ
काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो
दुज्झाओ दुव्विचिंतित्तो अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग-
पाउग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं
गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हं अणुव्वयाणं तिण्हं
गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावग-
धम्मस्स जं खंडियं जं विराहियं जो मे देवसिओ● अइयारो कओ
तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

- देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ,
देवसिओ संवच्छरिओ ।

ईर्यापथिक-सूत्र

इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए विराहणाए
गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसा-
उत्तिंग-पणग-दगमट्टी-मक्कड़ासंताणासंकमणे जेमे जीवा
विराहिया एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया
अभिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया
किलामिया उह्विया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ
ववरोविया, जो मे देवसिओ● अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि
दुक्कडं।

रत्नत्रय

साधना रत्न-त्रयी की विनयनत हो मैं करूं।
एक लय हो एक रस हो भाव-तन्मयता वरूं।।
ज्ञान, दर्शन, चरण की पावन त्रिवेणी में नहा।
देव! मैं निर्मल बनूं यह स्वप्न मानस में रहा।।
प्राप्त सम्यग् ज्ञान मुझको और दर्शन भी मिला।
आचरण का सुमन सुन्दर हृदय-वनिका में खिला।।

ज्ञान

आगमे तिविहे पण्णत्ते तं जहा-सुत्तागमे, अत्थागमे,
तदुभयागमे।

-
- देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ,
देवसिओ संवच्छरिओ।

अर्हंतों के अनुभवों का आगमों में सार है।
वह हमारी साधना का प्राणमय आधार है।।
सूत्र आगम, अर्थ आगम, तदुभयागम रम्य है।
विविध नय की दृष्टियों से सहज सरल सुगम्य है।।
ज्ञान के १४ अतिचार

अमल अन्तःकरण से अतिचार की आलोचना।
कर रहा हूं सरलता से हृदय ग्रन्थि विमोचना।।
सूत्र पढ़ते समय आगे और पीछे कर दिया,
अन्य आगम पाठ का उसमें अगर मिश्रण किया।
कम अधिक अक्षर कहे पदहीन पाठ पढ़े कहीं,
मध्य विराम लिया नहीं, अरु घोष भी समुचित नहीं।।
योग-विरहित पाठ में संबंध यदि जोड़ा नहीं,
अर्थ समझे बिना ही पद बीच में तोड़ा कहीं।
ज्ञान अच्छे ढंग से ना कभी ग्राहक को दिया,
संग्रहण संबोध का विपरीत मति से जो किया।।
अकाले स्वाध्याय कर की ज्ञान की आशातना,
काल में आलस किया पर हुआ पश्चात्ताप ना।
कर लिया स्वाध्याय कादाचित्क अस्वाध्यायिके,
अरु कभी स्वाध्याय कर पाया नहीं स्वाध्यायिके।।
जो में देवसिओ • अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'

-
- देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

दर्शन-सम्यक्त्व

अरंहतो महदेवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ।
जिणपण्णत्तं तत्तं, इय सम्मत्तं मए गहियं ॥
देव मेरे दिव्य अर्हन्, श्रेष्ठ सारे लोक में ।
साधना-धन साधु मेरे सुगुरु पथ-आलोक में ॥
धर्म वह जो साधना-पथ केवली उपदिष्ट है ।
आत्म-निष्ठामय अमल सम्यक्त्व मुझको इष्ट है ॥

सम्यक्त्व के लक्षण^१ :

शांत हैं आवेग सारे, शांति मन में व्याप्त है ।
मुक्त होने की हृदय में प्रेरणा पर्याप्त है ॥
वृत्ति में वैराग्य, अन्तर्भाव में करुणा विमल ।
अटल आस्था ये सभी सम्यक्त्व के लक्षण सबल ॥

सम्यक्त्व के भूषण^२ :

लक्ष्य में स्थिरता निरन्तर भक्ति-भावित भावना ।
धर्म शासन की करुं निःस्वार्थ सतत प्रभावना ।
जैन तत्त्वज्ञान में हो सहज जिज्ञासा प्रबल ।
संघ-सेवा ये सभी सम्यक्त्व के भूषण अमल ॥

१. पांच लक्षण—१. शम २. संवेग ३. निर्वेद ४. अनुकम्पा ५. आस्तिक्य ।

२. पांच भूषण—१. स्थैर्य २. भक्ति ३. प्रभावना ४. कौशल ५. तीर्थसेवा ।

दर्शन के ५ अतिचार

लक्ष्य के प्रति चित्त में सन्देह या भय छा गया,
जो नहीं है लक्ष्य उसके प्रति हृदय ललचा गया।
धर्म-फल की प्राप्ति में मैंने अगर संशय किया,
लक्ष्य-प्रतिगामी प्रशंसा की तथा परिचय किया।।
जो मे देवसिओ● अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कड़ं'

बारह व्रत और अतिचार

श्रावक के अणुव्रत

धन्य हैं मुनिवर महाव्रत पालते सद्भाव से,
त्याग पथ पर हो समर्पित जी रहे समभाव से।
है महाव्रत साध्य मेरा किन्तु वह दुःसाध्य है,
पर अणुव्रत मार्ग मध्यम सरल और सुसाध्य है।।

१. अहिंसा अणुव्रत

पढमं अणुव्वयं थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं
स्थूल हिंसा-विरति श्रावक का अणुव्रत है प्रथम,
जैन श्रमणोपासकों की अर्हता है न्यूनतम।

-
- देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ,
देवसिओ संवच्छरिओ।

द्वीन्द्रियादिक जगत के गतिशील त्रस प्राणी सभी, लक्ष्यपूर्वक निरपराधी का न वध करना कभी। आत्मरक्षा देशरक्षा आदि कुछ अपवाद है, दो करण त्रय योग से संकल्प यह अविवाद है। देहधारी हूं अतः आरंभ भी अनिवार्य है, किन्तु यह संकल्पजा हिंसा सदा परिहार्य है॥

अहिंसा अणुव्रत के ५ अतिचार

क्रोधवश पशु या मनुज को बन्धनों से बांधकर, पीटकर या निष्करुण हो अंग का विच्छेद कर। लादकर अतिभार पशुओं पर स्वयं निर्दय बना, जीविका विच्छिन्न कर यह हृदय पापों से सना॥ जो मे देवसिओ● अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'

२. सत्य अणुव्रत

बीयं अणुव्वयं थूलाओ मुसावायाओ वेरमणं स्थूल मिथ्या वचन-विरमण है अणुव्रत दूसरा, यथासंभव झूठ से बचकर वचन बोलूं खरा। त्याग कन्यालीक का त्यों गाय विषय अलीक का, भूमि क्रय-विक्रय प्रसंगे क्यो अतिक्रम लीक^१ का।

- देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ। १. मर्यादा

ना धरोहर को नकारूंगा स्वयं की मानकर,
 मैं नहीं दूंगा कभी झूठी गवाही जानकर।
 दो करण अरु तीन योगों से हमेशा त्याग है,
 सत्य व्रत संकल्प से मुझको विपुल अनुराग है॥

सत्य अणुव्रत के ५ अतिचार

बिना पुष्ट प्रमाण सहसा दोष यों ही मढ़ दिया,
 रहसि चिन्तन निरत पर आरोप कोई गढ़ दिया।
 मर्म उद्घाटन किया हो, गलत पथदर्शन किया,
 लेख झूठा लिख किसी का अहित सम्पादन किया॥
 जो मे देवसिओ● अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'

३. अस्तेय अणुव्रत

तइयं अणुव्वयं थूलाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं
 व्रत अदत्तादान-विरमण तीसरा विख्यात है,
 स्थूल चोरी त्याग से इसकी सहज शुरुआत है।
 खात^१ खनकर तोड़कर दीवार चोरी ना करूं,
 ग्रन्थि भेदन कर पराया धन कभी क्यों मैं हरूं?

- देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ,
 देवसिओ संवच्छरिओ।

१. खाई आदि खोदकर।

तोड़ ताला पतित विस्मृत नहीं कोई चीज लूं,
 क्यों किसी धनवान का धन लूटकर उसको छलूं।
 दो करण अरु तीन योगों से करूं व्रत पालना,
 चाहता मैं इस सुरक्षा-कवच को संभालना॥

अचौर्य अणुव्रत के ५ अतिचार

ली चुराई वस्तु या सहयोग चोरों को दिया,
 जा विरोधी राज्य में लंघन व्यवस्था का किया।
 तोल अथवा माप में की हो कमी-बेसी अगर,
 लोभवश पकड़ी कभी बेमेल मिश्रण की डगर॥
 जो मे देवसिओ● अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'

४. स्वदारसंतोष अणुव्रत (ब्रह्मचर्य अणुव्रत)

चउत्थं अणुव्वयं थूलाओ मेहुणाओ वेरमणं

अणुव्रत चौथा निरूपित स्थूल मैथुन-विरति है,
 जिन्दगी भर पालने से सहज होती सुगति है।
 दिव्य भोगों को न भोगूं दो करण त्रय योग से,
 विरत मैथुन से रहूं मैं आत्मबल सहयोग से।
 मनुज या तिर्यच विषयक कामभोग अनल्प हैं,
 ना करूं मैं कभी सेवन काय से संकल्प है॥

- देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ,
 देवसिओ संवच्छरिओ।

ब्रह्मचर्य अणुव्रत के ५ अतिचार

कुछ समय आश्रित बना आलाप यदि मैंने किया,
बिना पाणिग्रहण ही संलाप कर प्रश्रय दिया।
कामक्रीड़ा परविवाह प्रसंग में सक्रिय रहा,
तीव्र भोगासक्ति का यदि स्रोत जीवन में बहा।।
जो मे देवसिओ● अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'

५. इच्छापरिमाणव्रत (अपरिग्रह अणुव्रत)

पंचमं अणुव्वयं थूलाओ परिग्गहाओ वेरमणं
पांचवां व्रत उपासक का परिग्रह-परिमाण है,
कामनाओं पर नियंत्रण स्वयं का कल्याण है।
खेत और मकान का सीमाकरण अब मान्य है,
स्वेच्छया सीमित रजत-सोना तथा धन-धान्य है।
द्विपद चाहे हों चतुष्पद सभी का परिमाण है,
कुप्य सीमाधिक परिग्रह ग्रहण प्रत्याख्यान है।
करण एक त्रियोग से स्वीकृत नियम की साधना,
स्थूल अपरिग्रह अणुव्रत की करूं आराधना।।

-
- देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ,
देवसिओ संवच्छरिओ।

अपरिग्रह अणुव्रत के ५ अतिचार

खेत, घर, सोना, रजत परिमाण का लंघन किया
और सीमा से अधिक धन-धान्य मैंने रख लिया।
द्विपद—दासी दास पशु-संख्या अगर ऊपर चढ़ी,
कुप्य—शेष अशेष सामग्री सदन की जो बढ़ी॥
जो मे देवसिओ● अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'

६. दिग्व्रत

छट्टं दिसिच्चयं

दिशाव्रत छट्टा दिशाओं का करुं परिमाण मैं,
ऊर्ध्व तिर्यग् दिक् अधो दिक् का रखूंगा ध्यान मैं।
किया सीमांकन उसी का कर अतिक्रम काय से,
पांच आश्रव निषेवन का त्याग अपनी राय से।
इक करण अरु तीन योगों का स्मरण प्रतिदिन रहे,
जिन्दगी भर दिशाव्रत परिमाण की धारा बहे॥

दिग्व्रत के ५ अतिचार

कर अतिक्रम ऊर्ध्वदिक् परिमाण अगर बढ़ा दिया,
अधो दिक् तिर्यग् दिशा में गमन सीमाधिक किया।
घटाकर सीमा कहीं पर-क्षेत्र में अभिवृद्धि की,
विस्मरणवश बढ़ा सीमा निज प्रयोजन सिद्धि की॥
जो मे देवसिओ● अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'

- देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ,
देवसिओ संवच्छरिओ।

७. उपभोग परिभोग परिमाण व्रत

सत्तमं उवभोगपरिभोग-परिमाणव्वयं

भोग के साधन विपुल हैं अतुल मन की लालसा, लालसा की पूर्ति में आरम्भ है भूचाल-सा। खाद्य संयम वस्त्र संयम वस्तु का संयम बढ़े, भोग या उपभोग का संयम सफलता से सधे।। प्रथम उल्लणिया^१—अंगोछों का सविधि परिमाण हो, दंतवण^२—सीमित दंतौनों का सहज संज्ञान हो। फलों की विधि^३ तैलमर्दन^४ और उबटन^५ स्नान^६ जो, वस्त्र की विधि^७ विलेपन^८ पुष्पाभरण^{९,१०} पहचान हो। अगरु—धूपन^{११} पेय बहुविध^{१२} भक्ष्य^{१३}—घेवर आदि हैं, तथा ओदन^{१४} सूपविधि^{१५} अरु विगयविधि^{१६} निरुपाधि है। शाक^{१७} मधुरिम फल^{१८} सरस भोजन^{१९} उदक विधि^{२०} ज्ञेय है, और विधि मुखवास^{२१} वाहन^{२२} शयन^{२३} की आदेय है।। पादुका^{२४} व सचित्त^{२५} विधि द्रव्यादि का सीमाकरण^{२६}, अधिकतम उपभोग अरु परिभोग का हो परिहरण। त्याग मुझको जिन्दगी भर इक करण त्रय योग से, मिला मौका साधना का किसी शुभ संयोग से।।

१-२१. उवासगदसाओ १/२९। २२-२६. श्रावक प्रतिक्रमण टीका सहित, पृ १३२

अपरिमित उपभोग से रहता मनुज संतप्त है,
द्विधा भोजन, कर्म से व्रत सातवां प्रज्ञप्त है।
टालने अतिचार भोजन के यथा अनिवार्य हैं,
तथा कर्मादान पन्द्रह कर्मतः परिहार्य हैं॥

उपभोगपरिभोग परिमाण व्रत के २० अतिचार

(भोजन संबंधी ५ अतिचार)

कर सचित्ताहार-वर्जन भूल से भक्षण किया,
हरा सूखा फल कभी गुठली सहित मुख में लिया।
बिन पके या अधपके धान्यादि खाने में लिए,
फेंकना जिनमें अधिक वे फ्रूट्स खाने में लिए॥

(कर्मादान (व्यापार) संबंधी १५ अतिचार)

बना अंगारे किया आरंभ तेजस्काय का,
काटकर जंगल किया विस्तार निज व्यवसाय का।
शकट भाटक स्फोटकम्मे और हाथी दांत का,
लाख रस विष केश का वाणिज्य जो बहुभांत का॥
यंत्र पीलन कर्म निर्लाछनकरण में लिप्तता,
लगा दावानल वनों में की अगर मैंने खता^१।
कभी खेती हेतु सर द्रह आदि का शोषण किया,
जीविका खातिर असंयति जीव का पोषण किया॥

जो मे देवसिओ● अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'

- देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ,
देवसिओ संवच्छरिओ।

१. खता—चूक।

८. अनर्थदंडविरमण व्रत

अट्टमं अणट्टादंडवेरमणव्वयं

आठवां व्रत है अनर्थक दंड से विरमण सदा,
चतुर्विध प्रज्ञप्त उसका हो न आसेवन कदा।
बंधकारक अशुभ चिन्तन अपध्यानाचरित है,
मत्त होकर क्रिया करना स्वप्रमादाचरित है।
हिंस्र शस्त्र प्रदान करना पथ न श्रावक धर्म का,
अन्य को उपदेश देना पापकारी कर्म का।
इस अनर्थकदण्ड का मैं त्याग आजीवन करूं,
दो करण त्रय योग से हो सजग आगे पग धरूं॥

अनर्थदंड विरमण व्रत के ५ अतिचार

काम उद्दीपक क्रियाएं भांड-चेष्टा हो गई,
चेतना सुविवेक की यदि मुखरता में खो गई।
अस्त्र-शस्त्रों का किया संयोग निर्हेतुक कभी,
हुआ उप-परिभोग का अतिरेक ये दुष्कृत सभी॥
जो मे देवसिओ • अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'

-
- देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ,
देवसिओ संवच्छरिओ।

९. सामायिक व्रत

नवमं सामाङ्ग्यव्वयं

नवम व्रत सावद्य योगों से विरति समतामयी,
दो करण त्रय योग से मैं करूं सामायिक सही।
नियत कालावधि सुनिश्चित शान्त मन से साधना,
एक लय से एक रस से आत्म-हित आराधना।।
धर्म है समता विषमता पाप का आधार है,
जैन शासन के निरूपण का यही बस सार है।
त्याग कर सावद्य चर्या सुखद सामायिक करूं,
लीन अपने आप में हो मैं भवोदधि को तरूं।

सामायिक व्रत के ५ अतिचार

साम्य के अभ्यास में मन-मलिनता यदि आ गई,
वचन काया पर कलुषता की घटा जो छा गई।
किया जो संकल्प उसका विस्मरण यदि हो गया,
काल सीमा आकलन में चित्त स्थिरता खो गया।।
जो मे देवसिओ● अङ्गारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'

-
- देवसिओ, राङ्गओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ,
देवसिओ संवच्छरिओ।

१०. देशावकाशिक व्रत

दसमं देसावगासियव्वयं

त्याग हिंसा आदि का सामान्य आजीवन किया।
और यातायात-सीमा हेतु दिग्ब्रत भी लिया।।
एक निश्चित समय तक उनको नियन्त्रित मैं करूं।
स्वल्पकालिक त्यागमय देशावकाशिक व्रत वरूं।।
पांच आश्रव द्वार सेवन का अहोनिशि त्याग है,
दो करण त्रय योग से जीवन सदा बेदाग है।
पूर्व स्वीकृत व्रतों में भी जो किया सीमाकरण,
ना करूं मन वचन काया से असीमित आचरण।।

देशावकाशिक व्रत के ५ अतिचार

दूर से चीजें मंगाई क्षेत्र सीमा लांघकर,
तथा भेजी अनुचरों के साथ सीमा पारकर।
शब्द से संकेत कर या रूप दिखलाकर कभी,
काम करवाया किसी से फेंक तृण कंकर कभी।।
जो मे देवसिओ● अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'

-
- देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ,
देवसिओ संवच्छरिओ।

११. पौषधोपवास व्रत

एगारसमं पोसहोववासव्वयं

रात दिन उपवास-युत पौषध नियम स्वीकार है, अशन, पानक, खाद्य एवं स्वाद्य का परिहार है। त्याग अब्रह्माचरण उन्मुक्त मणि स्वर्णादि का, और माला रंग चन्दन लेप आदि उपाधि का। शस्त्र मूसल आदि जितने पापकारी कार्य हैं, दो करण अरु योग त्रय से छोड़ने अनिवार्य हैं।।

पौषधोपवास व्रत के ५ अतिचार

अगर शय्या और संस्तारक न प्रतिलेखित किए, गलत विधि प्रतिलेखना कर काम में उनको लिए। बिन प्रमार्जन अगर उनका कर लिया उपयोग जो, तथा करके दुष्प्रमार्जन किया सहज प्रयोग जो।। प्रस्त्रवण उच्चार भूमि की न की प्रतिलेखना, की अगर उसमें रही हो सजगता की रेख ना। बिना पूंजी अविधि से पूंजी अगर भूमी रही, पूर्ण पौषध की अगर अनुपालना न हुई सही।
जो मे देवसिओ● अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'

- देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

१२. यथासंविभाग व्रत

बारसमं अहासंविभागव्वयं

यथाशक्ति विभाग देना वर श्रमण निर्ग्रन्थ को, साधना में अपेक्षित सहयोग श्रेयस पन्थ जो। पूर्ण प्रासुक एषणा के योग्य विविध पदार्थ ये, चतुर्दशविध दान मुनि को दूं सदा निस्वार्थ मैं॥ चतुर्विध अशनादि भक्षण योग्य चीजें ज्ञेय हैं, वस्त्र-भाजन और कंबल-पादप्रौंछन देय हैं। प्रातिहारिक फलक पीढा बिछौना संस्तारकं, तथा औषध और भेषज विविध रोग निवारकं। साधु-सतियों को समय पर सहज प्रतिलाभित करूं, भावना की नाव से संसार-सागर को तरूं॥

यथासंविभाग व्रत के ५ अतिचार

देय वस्तु सचित्त ऊपर रखी या उससे ढकी, कर अतिक्रम काल का की प्रार्थना आहार की। वस्तु अपनी किन्तु पर की बताकर यदि छल किया दान शोभा ख्याति मत्सर भाव से मुनि को दिया॥
जो मे देवसिओ● अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'

- देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

मारणांतिय संलेहणा :

देह की संलेखनामय मृत्यु पावन पर्व है।
दीर्घकालिक साधना का सफल सात्त्विक गर्व है॥
मृत्यु की सन्निकटता या देह-शक्ति क्षीण हो।
प्रवर तप के आचरण में भावना संलीन हो॥

संलेखना के ५ अतिचार :

ऐहलौकिक वस्तु में यदि आन्तरिक प्रियता रही,
पारलौकिक वस्तु में अनुरक्ति की धारा बही।
अगर जीवन मरण की आसक्ति में मन खो गया,
कामभोगों के लिए चैतन्य मेरा सो गया॥
जो मे देवसिओ● अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'
पांच अणुव्रत सात शिक्षाव्रत यही जीवन निधि।
सतत संयम-साधना से पूर्ण हो श्रावक-विधि॥
साधना में अति-व्यतिक्रम, अति अनाचरणं कृतं।
विफल हों सब पाप, स्वीकृत करूं मिथ्या दुष्कृतं॥
जो मे देवसिओ● अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'

-
- देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ,
देवसिओ संवच्छरिओ।

अभ्युत्थान-सूत्र

तस्स धम्मस्स केवलिपण्णत्तस्स अब्भुट्ठिओमि^१ आराहणाए
विरओमि विराहणाए सव्वं तिविहेण पडिक्कंतो वंदामि जिणे
चउवीसं ।

वंदना सूत्र

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहियाए* ।
अणुजाणह मे मिउग्गहं* । निसीहि^२ अहोकायं कायसंपासं ।
खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो
वइक्कंतो ?^३* जत्ता भे ?* जवणिज्जं च भे ?* खामेमि
खमासमणो! देवसियं वइक्कमं^४* आवस्सियाए^५ पडिक्कामामि

*चिह्नांकित स्थानों पर खड़े होने पर चित्र नं. ५ (पृ. ३०) की तरह और बैठने पर

चित्र नं. ६ (पृ. ३०) की तरह वंदना करें ।

१. चित्र नं. २ (पृ. ९) की तरह खड़े होकर ।

२. चित्र नं. ६ (पृ. ३०) की तरह बैठकर ।

३. दिवसो वइक्कंतो, राई वइक्कंता, दिवसो पक्खो वइक्कंतो, दिवसो चाउमासो
पक्खो वइक्कंतो, दिवसो संवच्छरो वइक्कंतो ।

४. देवसियं वइक्कमं, राइयं वइक्कमं, देवसियं पक्खियं वइक्कमं, देवसियं
चाउमासियं पक्खियं वइक्कमं, देवसियं संवच्छरियं वइक्कमं ।

५. चित्र नं. ५ (पृ. ३०) की तरह खड़े रहकर । नोट : दूसरे वंदना सूत्र में यहां खड़ा
नहीं होना ।

खमासमणाणं देवसियाए आसायणाए^१ तिक्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे देवसिओ^२ अइयारो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

वंदना सूत्र

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहियाए *। अणुजाणह मे मिउग्गहं *। निसीहि^३ अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो* ? * जत्ता भे ? * जवणिज्जं च भे ? * खामेमि खमासमणो! देवसियं वइक्कमं^४ * आवस्सियाए पडिक्कमामि खमासमणाणं

*चिह्नांकित स्थानों पर खड़े होने पर चित्र नं. ५ (पृ. ३०) की तरह और बैठने पर चित्र नं. ६ (पृ. ३०) की तरह वंदना करें।

१. देवसियाए आसायणाए, राइयाए आसायणाए, देवसियाए पक्खियाए आसायणाए, देवसियाए चाउमासियाए पक्खियाए आसायणाए, देवसियाए संवच्छरियाए आसायणाए।
२. देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खओ, देवसिओ संवच्छरिओ।
३. चित्र नं. ६ (पृ. ३०) की तरह बैठकर।
४. दिवसो वइक्कंतो, राई वइक्कंता, दिवसो पक्खो वइक्कंतो, दिवसो चाउमासो पक्खो वइक्कंतो, दिवसो संवच्छरो वइक्कंतो।
५. देवसियं वइक्कमं, राइयं वइक्कमं, देवसियं पक्खियं वइक्कमं, देवसियं चाउमासियं पक्खियं वइक्कमं, देवसियं संवच्छरियं वइक्कमं।

देवसियाए आसायणाए^१ तिक्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए
मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए
लोभाए सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए
आसायणाए जो मे देवसिओ^२ अइयारो कओ तस्स खमासमणो!
पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

क्षमा-याचना-सूत्र

खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मेत्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ॥
पूज्य-पूजा का व्यतिक्रम जान या अनजान में,
की अवज्ञा लघुजनों की मग्न हो अभिमान में ।
दे रहा मैं क्षमा सबको दें क्षमा मुझको सभी,
मित्र सब हैं शत्रुता का भाव लाऊं ना कभी ॥

जीव-योनि

सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख
तेजस्काय, सात लाख वायुकाय, दस लाख प्रत्येक
वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दो लाख

-
१. देवसियाए आसायणाए, राइयाए आसायणाए, देवसियाए पक्खियाए आसायणाए,
देवसियाए चाउमासियाए पक्खियाए आसायणाए, देवसियाए संवच्छरियाए
आसायणाए ।
 २. देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ,
देवसिओ संवच्छरिओ ।

द्वीन्द्रिय, दो लाख त्रीन्द्रिय, दो लाख चतुरिन्द्रिय, चार लाख नारक, चार लाख देवता, चार लाख तिर्यच पंचेन्द्रिय, चौदह लाख मनुष्य जाति—चार गति, चौरासी लाख जीव-योनि पर राग-द्वेष आया हो तो जो मे देवसिओ● अइयारो कओ 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं'।

'मत्थएण वंदामि' चौथा आवश्यक समाप्त, पांचवें 'कायोत्सर्ग' आवश्यक की आज्ञा।

कायोत्सर्ग संकल्प सूत्र

देवसिय^१-अइयार-विसोहणटुं करेमि काउस्सगं।

प्रायश्चित्त-सूत्र

इच्छामि ठाइउं काउस्सगं जो मे देवसिओ● अइयारो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मगगो अकप्पो अकरणज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हं अणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडियं जं विराहियं जो मे देवसिओ● अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

१. देवसिय, राइय, देवसिय पक्खिय, देवसिय चाउमासिय पक्खिय देवसिय संवच्छरिय।

● देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ, देवसिओ संवच्छरिओ।

कायोत्सर्ग-प्रतिज्ञा

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं
विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्टाए ठामि काउस्सग्गं
अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं
उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं
अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं
एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ होज्ज मे काउस्सग्गो
जाव अरहंताणं भगवंताणं नम्मोक्कारेणं न पारेमि ताव कायं।

ध्यान प्रारम्भ (चित्र नं. ३ (पृ. १०) की तरह)

ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

चतुर्विंशति-स्त्व^१

१. लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली॥
२. उसभमजियं च वंदे, संभवमभिनंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे॥
३. सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि॥
४. कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च॥
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च॥

१. दैवसिक और रात्रिक प्रतिक्रमण में ४, पाक्षिक में १२, चातुर्मासिक में २०
और सावत्सरिक में ४० लोगस्स का ध्यान करें।

५. एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीण-जरमरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥
६. कित्तिय-वंदिय-मए, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरोग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥
७. चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥

नमस्कार-सूत्र

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो
उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।

(ध्यान समाप्त)

चतुर्विंशति-स्तव

१. लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥
२. उसभमजियं च वंदे, संभवमभिनंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वदे ॥
३. सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥
४. कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥
५. एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीण-जरमरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥

६. कित्तिथ-वंदिय-मए, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरोग्ग-बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥
७. चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥

वंदना सूत्र

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहियाए* ।
अणुजाणह मे मिउग्गहं* । निसीहि^१ अहोकायं कायसंफासं ।
खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो
वइक्कंतो ?^२* जत्ता भे ?* जवणिज्जं च भे ?* खामेमि
खमासमणो! देवसियं वइक्कमं^३* आवस्सियाए^४ पडिक्कमामि
खमासमणाणं देवसियाए आसायणाए^५ तित्तीसन्नयराए, जं किंचि
मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए

*चिह्नांकित स्थानों पर खड़े होने पर चित्र नं. ५ (पृ. ३०) की तरह और बैठने पर
चित्र नं. ६ (पृ. ३०)की तरह वंदना करें ।

१. चित्र नं. ६ (पृ. ३०) की तरह बैठकर ।
२. दिवसो वइक्कंतो, राई वइक्कंता, दिवसो पक्खो वइक्कंतो, दिवसो चाउमासो
पक्खो वइक्कंतो, दिवसो संवच्छरो वइक्कंतो ।
३. देवसियं वइक्कमं, राइयं वइक्कमं, देवसियं पक्खियं वइक्कमं, देवसियं
चाउमासियं पक्खियं वइक्कमं, देवसियं संवच्छरियं वइक्कमं ।
४. चित्र नं. ५ (पृ. ३०) की तरह खड़े रहकर । नोट : दूसरे वंदना सूत्र में यहां खड़ा
नहीं होना ।
५. देवसियाए आसायणाए, राइयाए आसायणाए, देवसियाए पक्खियाए आसायणाए,
देवसियाए चाउमासियाए पक्खियाए आसायणाए, देवसियाए संवच्छरियाए
आसायणाए ।

मायाए लोभाए सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए
 सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे देवसिओ^१ अइयारो कओ
 तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं
 वोसिरामि ।

वंदना सूत्र

इच्छामि खमासमणो! वंदितं, जावणिजाए निसीहियाए* ।
 अणुजाणह मे मिउग्गहं* । निसीहि^२ अहोकायं कायसंफासं ।
 खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो
 वइक्कंतो^३?* जत्ता भे?* जवणिज्जं च भे?* खामेमि
 खमासमणो! देवसियं वइक्कमं^४* आवस्सियाए पडिक्कमामि
 खमासमणाणं देवसियाए आसायणाए^५ तित्तीसन्नयराए, जं किंचि
 मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए

*चिह्नांकित स्थानों पर खड़े होने पर चित्र नं. ५ (पृ. ३०) की तरह और बैठने पर
 चित्र नं. ६ (पृ. ३०) की तरह वंदना करें।

१. देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ,
 देवसिओ संवच्छरिओ ।
२. चित्र नं. ६ (पृ. ३०) की तरह बैठकर ।
३. दिवसो वइक्कंतो, राई वइक्कंता, दिवसो पक्खो वइक्कंतो, दिवसो चाउमासो
 पक्खो वइक्कंतो, दिवसो संवच्छरो वइक्कंतो ।
४. देवसियं वइक्कमं, राइयं वइक्कमं, देवसियं पक्खियं वइक्कमं, देवसियं
 चाउमासियं पक्खियं वइक्कमं, देवसियं संवच्छरियं वइक्कमं ।
५. देवसियाए आसायणाए, राइयाए आसायणाए, देवसियाए पक्खियाए आसायणाए,
 देवसियाए चाउमासियाए पक्खियाए आसायणाए, देवसियाए संवच्छरियाए
 आसायणाए ।

मायाए लोभाए सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए
सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे देवसिओ^१ अइयारो कओ
तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं
वोसिरामि।

(चित्र नं. ४ (पृ. १३) की तरह बैठकर)

‘मत्थएण वंदामि’ पांचवां आवश्यक समाप्त,
छठे ‘प्रत्याख्यान’ आवश्यक की आज्ञा।

अतीत का प्रतिक्रमण, वर्तमान काल की सामायिक तथा
भविष्यत् काल का प्रत्याख्यान।^२

सामायिक, चतुर्विंशति-स्तव, वंदना, प्रतिक्रमण,
कायोत्सर्ग, प्रत्याख्यान-इन छहों आवश्यकों में जाने-अनजाने
जो कोई अतिचार-दोष लगा हो तथा पाठ का उच्चारण करते
समय मात्रा, अनुस्वार, अक्षर हीन, अधिक, ऊंचा, नीचा, आगे
पीछे कहा हो तो जो मे देवसिओ● अइयारो कओ ‘तस्स मिच्छा
मि दुक्कडं।’

-
१. देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ,
देवसिओ संवच्छरिओ।
 २. दैवसिक तथा रात्रिक प्रतिक्रमण में कम से कम एक दिन के लिए त्याग
करें। जैसे पापड़ खाने का त्याग, नवकारसी का त्याग आदि। इसी प्रकार
पाक्षिक में एक पक्ष के लिए, चातुर्मासिक में चार मास के लिए, सांवत्सरिक
में एक वर्ष के लिए कोई प्रत्याख्यान करें।
 - देवसिओ, राइओ, देवसिओ पक्खिओ, देवसिओ चाउमासिओ पक्खिओ,
देवसिओ संवच्छरिओ।

शक्र स्तुति

नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं
सहसंबुद्धाणं पुरिसोत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं
पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं
लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं
मग्गदयाणं सरणदयाणं जीवदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं
धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत-
चक्कवट्टीणं दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा अप्पडिहय-
वरनाणदंसणधराणं विअट्टुछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं
तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वण्णूणं
सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाह-
मपुणरावत्तयं सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं
जियभयाणं।

शक्र-स्तुति

नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं
सहसंबुद्धाणं पुरिसोत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं
पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं
लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं
मग्गदयाणं सरणदयाणं जीवदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं
धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत-
चक्कवट्टीणं दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा अप्पडिहय-
वरनाणदंसणधराणं विअट्टुछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं

तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वण्णूणं
 सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाह-
 मपुणारावत्तयं सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपाविउकामाणं नमो
 जिणाणं जियभयाणं ।

पहला नमोत्थु णं सिद्ध भगवान के प्रति, दूसरा नमोत्थु णं
 अरिहंत भगवान के प्रति । तीसरा नमोत्थु णं मम धम्मायरियस्स
 धम्मोवदेसगस्स थवत्थुई मंगलं श्री श्री श्री १००८ आचार्यश्री
 महाश्रमणजी के प्रति ।

(‘नमस्कार सूत्र’ का पांच बार पाठ करें)

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो
 उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।

पंचपद-वदना (चित्र नं. १ (पृ. ८) की तरह)

णमो अरहंताणं—परम अर्हता सम्पन्न, चार घनघाती कर्म
 का क्षय कर, अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत चारित्र, अनंत
 शक्ति और आठ प्रातिहार्य—इन बारह गुणों से सुशोभित,
 चौंतीस अतिशय, पैंतीस वचनातिशय से युक्त, धर्मतीर्थ के
 प्रवर्तक, वर्तमान तीर्थकर सीमंधर आदि अर्हतों को विनम्र भाव
 से पंचांग प्रणतिपूर्वक भावभीनी वंदना—(तिक्खुत्तो आयाहिणं
 पयाहिणं करेमि)^१ वंदामि नमंsamि सक्कारेमि सम्माणेमि
 कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि ।

१. “तिक्खुत्तो....करेमि” यह बोलना नहीं है ।

णमो सिद्धाणं—परम सिद्धि संप्राप्त, अष्टकर्म क्षय कर केवलज्ञान, केवलदर्शन, असंवेदन, आत्मरमण, अटल अवगाहन, अमूर्ति, अगुरुलघु और निरंतराय—इन आठ गुणों से सम्पन्न, परमात्मा, परमेश्वर, जन्म-मरण-जरा-रोग-शोक-दुःख-दारिद्र्य रहित अनंत सिद्धों को विनम्र भाव से पंचांग प्रणतिपूर्वक भावभीनी वंदना—वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि ।

णमो आयरियाणं—परम आचार-कुशल, धर्मोपदेशक, धर्मधुरंधर, बहुश्रुत, मेधावी, सत्यनिष्ठ, श्रद्धा-धृति-शक्ति-शांति सम्पन्न, अष्ट गणि-सम्पदा से सुशोभित, द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के ज्ञाता, चतुर्विध धर्मसंघ के शास्ता, तीर्थंकर के प्रतिनिधि एवं छत्तीस गुणों के धारक वर्तमान आचार्यश्री महाश्रमण आदि धर्माचार्यों को विनम्र भाव से पंचांग प्रणतिपूर्वक भावभीनी वंदना—वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि ।

णमो उवज्झायाणं—परमश्रुत स्वाध्यायी, धर्मसंघ में आचार्य द्वारा नियुक्त, ग्यारह अंग तथा बारह उपांग के धारक, अध्ययन और अध्यापन में कुशल—इन पच्चीस गुणों से

सुशोभित उपाध्यायों को विनम्र भाव से पंचांग प्रणतिपूर्वक भावभीनी वंदना—वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि ।

णमो लोए सव्वसाहूणं—अध्यात्म-साधना में संलग्न, पांच महाव्रत, पंचेन्द्रिय निग्रह, चार कषाय-विवेक, भाव सत्य, करण सत्य, योग सत्य, क्षमा, वैराग्य, मन-वचन-काय समाहरणता, ज्ञान, दर्शन, चारित्र सम्पन्नता, वेदना और मृत्यु के प्रति सहिष्णुता—इन सत्ताईस गुणों से सुशोभित, परीषहजयी, प्रासुक एषणीय भोजी, अर्हत् और आचार्य की आज्ञा के आराधक, तपोधन साधु-साध्वियों को विनम्र भाव से पंचांग प्रणतिपूर्वक भावभीनी वंदना—वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि ।

परिशिष्ट

संक्षिप्त भावानुवाद
सामायिक-प्रतिज्ञा
सामायिक आलोचना
पौषध-प्रतिज्ञा
पौषध-आलोचना

संक्षिप्त भावानुवाद

नमस्कार-सूत्र

अर्हतों को मेरा नमस्कार हो, सिद्धों को मेरा नमस्कार हो, आचार्यों को मेरा नमस्कार हो, उपाध्यायों को मेरा नमस्कार हो, लोक के सर्व साधुओं को मेरा नमस्कार हो।

यह पंच नमस्कार महामन्त्र सब पापों का विनाशक है और सब मंगलों में उत्कृष्ट मंगल है।

वंदन-विधि

मैं दाईं ओर से आरंभ कर, तीन बार प्रदक्षिणा देते हुए वंदना करता हूं, नमस्कार करता हूं, सत्कार करता हूं, सम्मान करता हूं। आप कल्याणकारी हैं, मंगल हैं, धर्मदेव हैं, ज्ञानवान् हैं (चित्त को प्रसन्न करने वाले हैं), मैं आपकी पर्युपासना करता हूं, मस्तक झुकाकर वंदना करता हूं।

मंगल-सूत्र

चार मंगल हैं—अर्हत्, सिद्ध, साधु और केवलि-प्रज्ञप्त धर्म। लोक में चार उत्तम हैं—अर्हत्, सिद्ध, साधु और केवलि-प्रज्ञप्त धर्म।

चार की शरण में जाता हूँ—अर्हतों की, सिद्धों की, साधुओं की और केवलि-प्रज्ञस धर्म की।

सामायिक-प्रतिज्ञा

भगवन्! मैं सामायिक-व्रत (समत्व की साधना) ग्रहण करता हूँ। सावद्य योग का (पाप सहित प्रवृत्ति) एक मुहूर्त (४८ मिनट) तक मैं दो करण, तीन योग से (न करूं, न कराऊं, मन से, वचन से, काया से) त्याग करता हूँ। अतीत के सावद्य योग का प्रतिक्रमण करता हूँ, उसकी निन्दा करता हूँ, गर्हा करता हूँ और अपने आपको उससे व्युत्सृष्ट करता हूँ।

ईर्यापथिक-सूत्र

मैं ईर्यापथ सम्बन्धी विराधना के लिए प्रतिक्रमण करना चाहता हूँ—जाने-आने में, प्राणों (द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय) को लांघते समय, बीजों को लांघते समय, हरितकाय को लांघते समय तथा ओस, कीटिका-नगर (चींटियों के बिलों), फफुंदी, कीचड़ और मकड़ी के जालों के संक्रमण करते समय जो ये जीव विराधित हुए हों, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय। सामने आते हुए जीवों को हत किया हो, उनकी दिशा बदली हो, उन्हें चोट पहुंचाई हो, उन्हें इकट्ठा किया हो, उन्हें हिलाया-डुलाया हो, उन्हें परितप्त किया हो, उन्हें क्लान्त किया हो, उन्हें उत्त्रासित किया हो, उन्हें स्थानान्तरित किया हो, उन्हें जीवन से रहित किया हो, उससे संबंधित मेरा दुष्कृत निष्फल हो।

कायोत्सर्ग-प्रतिज्ञा

मैं अविधिकृत आचरण के परिष्कार द्वारा, प्रायश्चित्त द्वारा, विशोधन द्वारा और शल्य (अपराध) विमोचन द्वारा पाप कर्मों को नष्ट करने के लिए कायोत्सर्ग में स्थित होता हूँ। उच्छ्वास, निःश्वास, खांसी, छींक, जम्हाई, डकार, अधोवायु, चक्कर, पित्तजनित मूर्च्छा, शरीर के अंगों के सूक्ष्म संचार, श्लेष्म के सूक्ष्म संचार और दृष्टि के सूक्ष्म संचार—ये प्रवृत्तियां कायोत्सर्ग में बाधक नहीं बनेंगी। इसी प्रकार के अन्य (स्वाभाविक और विकारजनित) अपवादों के द्वारा भग्न और विराधित नहीं हो मेरा कायोत्सर्ग। जब तक मैं अर्हत् भगवान् को नमस्कार कर उसे सम्पन्न न करूँ, तब तक मैं काया को स्थान—स्थिर मुद्रा, मौन और शुभ ध्यान के द्वारा अपनी आत्मा (शरीर) का व्युत्सर्ग करता हूँ।

चतुर्विंशति-स्तव

१. लोक में प्रकाश करने वाले, धर्मतीर्थ के प्रवर्तक, जिन, अर्हत्, चौबीस ही केवलियों का मैं कीर्तन करूंगा।

२. मैं ऋषभ और अजित को वंदन करता हूँ। संभव, अभिनन्दन, सुमति को वन्दन करता हूँ। पद्मप्रभ, सुपार्श्व और चन्द्रप्रभ जिनेश्वर को वन्दन करता हूँ।

३. मैं पुष्पदन्त यानी सुविधि, शीतल, श्रेयांस, वासुपूज्य, विमल, अनन्त, धर्म और शान्ति जिनेश्वर को वन्दन करता हूँ।

४. मैं कुन्थु, अर, मल्लि, मुनिसुव्रत और नमि जिनेश्वर को वन्दन करता हूँ। मैं अरिष्टनेमि, पार्श्व तथा वर्द्धमान को वन्दन करता हूँ।

५. इस प्रकार जिनकी मैंने स्तुति की है, जिन्होंने कर्म-रज मल को धुन डाला है, जो जरा और मरण से मुक्त हैं, वे चौबीस ही जिनवर तीर्थकर मुझ पर प्रसन्न हों।

६. मैंने जिनका कीर्तन और वन्दन किया है, जो ये लोक में उत्तम सिद्ध हैं (वे) आरोग्य, बोधिलाभ और उत्तम समाधिवर दें।

७. चन्द्रों से निर्मलतर, सूर्यों से अधिक प्रकाश करने वाले और समुद्र से अधिक गंभीर सिद्ध भगवान मुझे सिद्धि प्रदान करें।

शक्र-स्तुति

मेरा नमस्कार हो अर्हत्, भगवान्, धर्म के आदिकर्ता, तीर्थकर, स्वयं संबुद्ध, पुरुषोत्तम, पुरुषसिंह, पुरुषों में प्रवर पुंडरीक, पुरुषों में प्रवर गंधहस्ती, लोकोत्तम, लोकनाथ, लोकहितकारी, लोकप्रदीप, लोक में उद्योत करने वाले, अभयदाता, चक्षुर्दाता, मार्गदाता, शरणदाता, जीवनदाता, बोधिदाता, धर्मदाता, धर्मोपदेष्टा, धर्मनायक, धर्म सारथि, धर्म के प्रवर चतुर्दिक्जयी चक्रवर्ती को। जो द्वीप हैं, त्राण हैं, शरण, गति और प्रतिष्ठा हैं। अबाधित प्रवरज्ञान-दर्शन के धारक, आवरण रहित, ज्ञाता और ज्ञान देने वाले को, तीर्ण और तारक को, बुद्ध और बोधिदाता को, मुक्त और मुक्तिदाता को, सर्वज्ञ और सर्वदर्शी को,

कल्याणकारी, अचल, अरुज, अनन्त, अक्षय, अव्याबाध, पुनरावृत्ति से रहित, सिद्धि गति नामक स्थान को सम्प्राप्त (संप्राप्त करने वाले) उन जिनेश्वरों भयविजेताओं को नमस्कार हो।

प्रतिक्रमण प्रतिज्ञा

भगवन्! अपनी इच्छा से मुझे आप 'आवश्यक' की स्वीकृति दें। मैं दैनिक अतिचारों से निवृत्त होने के लिए प्रतिक्रमण में स्थित होता हूँ। मैंने दिन में जो ज्ञान, दर्शन और देश चारित्र्य व तप आराधना की, उसमें कोई अतिचार (दोष) लगा हो तो उसके चिंतन के लिए मैं कायोत्सर्ग करता हूँ।

प्रायश्चित्त-सूत्र

मैं अपने द्वारा किए हुए दैवसिक अतिचार के प्रतिक्रमण की इच्छा करता हूँ। मैंने कायिक, वाचिक, मानसिक अतिचार किया हो, उत्सूत्र की प्ररूपणा की हो, उन्मार्ग-मोक्ष मार्ग के प्रतिकूल मार्ग का प्रतिपादन किया हो, अकल्प्य-विधि के विरुद्ध आचरण किया हो, अकरणीय कार्य किया हो, अशुभ ध्यान—आर्त्त-रौद्र ध्यान किया हो, असद् चिन्तन किया हो, अनाचार और अवांछनीय का आचरण किया हो, श्रावक के लिए अयोग्य कार्य का आचरण किया हो, ज्ञान तथा दर्शन, देश-चारित्र्य, श्रुत और सामायिक के विषय में तथा तीन गुप्ति, चार कषाय, पांच अणुव्रत, तीन गुणव्रत, चार शिक्षाव्रत आदि द्वादशविध श्रावक धर्म को जो खण्डित किया हो, जो विराधित किया

हो। उससे संबंधित मेरा दुष्कृत निष्फल हो।

वन्दना-सूत्र

हे क्षमाश्रमण! मैं संयत निषद्या से बैठकर वन्दना करना चाहता हूँ।

मुझे अनुज्ञा दें मितावग्रह में प्रवेश करने की, बैठकर आपके चरणों का शरीर से (हाथों से) स्पर्श करने की। (इस स्पर्श से) आपको कष्ट हुआ हो तो मैं क्षम्य हूँ।

आप कष्टानुभूति से रहित हैं। आपका दिन बहुत शुभ प्रवृत्ति से बीता ?

आपकी यात्रा प्रशस्त रही ?

आपका यमनीय प्रशस्त रहा ?

हे क्षमाश्रमण! दिवस संबंधी व्यतिक्रम के लिए क्षमा चाहता हूँ। अवश्यकरणीय समाचारी के विषय में प्रतिक्रमण करता हूँ, क्षमाश्रमणों की दिवस-संबंधी तेतीस में से कोई एक भी आशातना की हो, आपके प्रति यत् किञ्चित् मिथ्याभाव आया हो, आपके प्रति मन का दुष्प्रयोग किया हो, वचन का दुष्प्रयोग किया हो, काया की दुष्प्रवृत्ति की हो, क्रोधवश व्यवहार किया हो, मानवश व्यवहार किया हो, मायावश व्यवहार किया हो, लोभवश व्यवहार किया हो, सर्वकाल में होने वाली, सर्वमिथ्या उपचारों से युक्त, सब धर्मों का अतिक्रमण करने वाली, कोई भी आशातना की हो, उनके विषय में जो मैंने

अतिचार किया हो, हे क्षमाश्रमण! मैं उसका प्रतिक्रमण करता हूँ, निन्दा करता हूँ, गर्हा करता हूँ, आशातना में प्रवृत्त अपने आपको उससे व्युत्सृष्ट करता हूँ।

आलोचना-सूत्र

उस सर्व दैवसिक अतिचार की—दुश्चिंतन, दुर्भाषित और दुर्चेष्टा की उसकी आलोचना करता हूँ, उससे प्रतिक्रान्त होता हूँ, उसकी निन्दा करता हूँ, गर्हा करता हूँ, अपने आपको उससे व्युत्सृष्ट करता हूँ।

अभ्युत्थान-सूत्र

मैं केवलीप्रज्ञप्त धर्म की आराधना करने के लिए अभ्युत्थान करता हूँ। उसकी विराधना से विरत होता हूँ। सर्व-त्रिविध योग से प्रतिक्रान्त होकर चौबीस तीर्थकरों को वन्दना करता हूँ।

कायोत्सर्ग संकल्प-सूत्र

दैवसिक अतिचारों के विशोधन के लिए कायोत्सर्ग करता हूँ।

सामायिक-प्रतिज्ञा

करेमि भन्ते! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव नियमं मुहुत्तं एगं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं — न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

सामायिक-आलोचना

नौवें सामायिक व्रत में जो कोई अतिचार—दोष लगा हो तो मैं उसकी आलोचना करता हूँ।

१. मन की सावद्य प्रवृत्ति की हो।
२. वचन की सावद्य प्रवृत्ति की हो।
३. शरीर की सावद्य प्रवृत्ति की हो।
४. सामायिक के नियमों का पूरा पालन न किया हो।
५. अवधि से पहले सामायिक को पूरा किया हो। 'तस्स मिच्छा मि दुक्कडं इनसे लगे मेरे पाप मिथ्या हो, निष्फल हो।

पौषध-प्रतिज्ञा

एक्कारसमं पोसहोववासव्वयं असण-पाण-खाइम-साइम-पच्चक्खाणं अबंभ-पच्चक्खाणं उम्मुक्कमणि-सुवण्णाइ-पच्चक्खाणं माला-वण्णाग-विलेवणाइ-पच्चक्खाणं सत्थमूसलाइ सावज्ज -जोग-पच्चक्खाणं जाव अहोरत्तं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि!

पौषध-आलोचना पाठ (गद्य)

ग्यारहवें पौषध-व्रत में जो कोई अतिचार (दोष) लगा हो तो मैं उसकी आलोचना करता हूँ/करती हूँ।

१. शय्या संधारे का (सोने-बैठने के स्थान और बिस्तर विधिवत्) का प्रतिलेखन नहीं किया हो।

२. शय्या, संधारे का विधिवत् प्रमार्जन नहीं किया हो।

३. उच्चार, प्रस्रवण भूमि (मल, मूत्र, खंखार परिष्ठापन करने के स्थान) का विधिवत् प्रतिलेखना नहीं किया हो।

४. उच्चार, प्रस्रवण भूमि का विधिवत् प्रमार्जन नहीं किया हो।

५. पौषध-व्रत के नियमों का विधिवत् पालन नहीं किया हो।

तस्स मिच्छा मि दुक्कडं—इनसे लगे मेरे पाप मिथ्या हो, निष्फल हों।

